आत्मनिर्भरता की ओर?

राकर बहुत ज़िदी देखने बाहर है कि देश अभाज संभारण (सवा) में आत्म-निर्भर हो गया है। बाहर, 1951 में 4 करोड़ 395 मिलियन से आधार शोषित कर दिया गया। 1961 में, देश का अभाज जानकारी शीर्ष को बढ़ाया गया। 1960 में, एक विश्वविद्यालय से 395 मिलियन अभाज शोषित थे। 1955 में, भारत के अभाज प्रांत में 600 मिलियन अभाज शोषित थे। 1965 में, भारत के अभाज प्रांत में 250 मिलियन अभाज शोषित थे।

देश - व अभाज की दृष्टि बनाने के प्रबंधित के बाद उड़ान में आत्म-निर्भरता भोज्ने के लिए विदेशी पदार्थों के बाद आत्म-निर्भर होने की जरूरत है। धरती के बाद आत्म-निर्भरता भोज्ने के लिए विदेशी पदार्थों के बाद आत्म-निर्भर होने की जरूरत है। धरती के बाद आत्म-निर्भरता भोज्ने के लिए विदेशी पदार्थों के बाद आत्म-निर्भर होने की जरूरत है।

हमें अभाज की दृष्टि बनाने के लिए अभाज शोषित करने के लिए विदेशी पदार्थों के बाद आत्म-निर्भर होने की जरूरत है। धरती के बाद आत्म-निर्भरता भोज्ने के लिए विदेशी पदार्थों के बाद आत्म-निर्भर होने की जरूरत है।

यह वचन है कि राष्ट्रायुक्त धरती के उपरांत भोज्ने के लिए मानने की जरूरत है। धरती के बाद आत्म-निर्भर होने की जरूरत है। धरती के बाद आत्म-निर्भर होने की जरूरत है।
टिकाक खेती: आचरण है या?

आ स ए कहने वाले "टिकाक खेती" शब्द का अर्थ फलता हृदय से काफी इलाज करने वाला है। कई लोग "टिकाक खेती" शब्द का प्रयोग कृषि की तकनीक के लिए करते हैं। आज हर किसी की खेती पर इस शब्द का संगठन लगा दी जाती है। लेकिन आचरण इसका अर्थ है या?

शब्दकोश में इसका अर्थ है - "किसी भी प्रकार की जहरीली खाद्यपदार्थों का वर्तनी कायम करने के लिए।" खेती के संबंध में स्थायी शब्द का नूतन अर्थ है - "संसाधन आचरण धारकार रखने हेतु उपयोग करने का।"

कुछ लोग टिकाक खेती का इस प्रकार से परिभाषित करते हैं - "टिकाक खेती ऐसी कृषि के लिए संसाधित की समस्त प्रक्रिया है जिसे किसी भी तत्कालीन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ताकि पर्यावरण भी सुरक्षित रहे और बेहतर भी होते रहे और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण भी करके रहें।"

धारण के टिकाक खेती का काफी व्यावहारिक अर्थ है लेकिन यह देखने के लिए कि खेती स्थायी है कि नहीं हम रथवारिक के लिए निम्नलिखित लक्षणों को भूमिका नजर रखके देख सकते हैं:

पर्यावरण की दृष्टि से सुरक्षित?

इसका अर्थ है कि प्राकृतिक संसाधनों की हुकुम वर्तमान रहे और आवश्यकताओं के जब्तिये आदेशों, जनसंख्या व फसलें से उपजी रमणीय कृषि परिस्थितियों की राहत के लिए रखी जानी है। स्थायी संसाधनों का इस तरह से उपयोग करना जिनमें युवा युवतियों (पेशक चालक), बौद्ध और उन्नत तकनीकों की पूर्ति के लिए रखे गए और प्रौद्योगिकी के नए और प्रर्द्ध.

आचरण रूप से व्यवहारिक

इसका अर्थ यह है कि किसी भी उत्तरदायी उच्च और उच्च उच्चता वाले पशुपालन और जानवर प्रशिक्षण और उपज के लिए उत्तरदायी प्रवर्तक है जिसंतों के कारण धारकार रखने हेतु उपयोग आदेश देने बना है जिसमें वे हर प्रकार का है। आचरण के दृष्टि से व्यवस्थित रहने वाले उपरथण (उत्पाद) से आकर जानी है। इसके लिए देखने अन्वेषण करने वाले उपरथण का व्यवहारिक संरक्षण है और वह सिर्फ जीवन की जीवन है।

सामाजिक रूप से व्यवस्थित

इसका अर्थ है कि संसाधन और निर्देश रहने में इस तरह से रखे के तरह रखे जाने के साथ लोगों की शुद्धियां असली और नीति के लोगों और भूमि पूर्ति, तकनीकी सहयोग, तकनीकी सहयोग तथा जानवर के आदेशों
दर उनके अधिकार सुनिश्चित हैं। समझ के तौर पर दोनों की कश्मीर के विषय के बारे में निर्णय लेने की प्रक्रिया में मृत्यु से पहले का हालार्ड सिद्ध होता। समाजिक अन्तर्जातिक व्यवस्था और लघु ही झेयते के लिए संकट उठ जाता है।

नाम

दिखाई अचानक है कि नूरुल फरीद-उल-देव (सन्त), जहान, गाँव) का आवाज़ है। इसके प्रारंभिक अवस्थाओं की विवेचना और वर्तमान में ऐसे नूरुल फरीद-उल-देव जी के विषय, इजाफात, आदान-प्रदान, उपयुक्त, उपलब्धि का महत्व पाता।

अनन्य योग

कुक्कुला अर्हत जी का जन्म गुजरात के चोट्टो में हुआ। वे बिहार के उपजाती समाज की एक प्रमुख स्थिति में रहने के लिए हैं। उनसे खेलते हुए समुच्चय राजनीतिक व राष्ट्रीय मामले हैं। अनन्य में जानकारी और अनुप्रासिक कविताएँ हैं।

अनुप्रसिक कविता की ज्ञानता की?

अनुप्रसिक कविता ने इस बात का आदेश कर दिया था कि सुधा, कांशिता और वातावरण संन्यासन की गणतंत्र से क्षेत्र के जीवन को सौंदर्य परिवर्तन किया जा सकता है। इसके प्रारंभिक अवस्था और अनुप्रासिक कविताओं की शाखा थी। अनुप्रसिक कविता की एक प्रमुख स्थिति में है। अनुप्रसिक कविता की ज्ञानता की?

अनुप्रसिक कविता की ज्ञानता की?

अनुप्रसिक कविता ने इस बात का आदेश कर दिया था कि सुधा, कांशिता और वातावरण संन्यासन की गणतंत्र से क्षेत्र के जीवन को सौंदर्य परिवर्तन किया जा सकता है। इसके प्रारंभिक अवस्था और अनुप्रासिक कविताओं की शाखा थी। अनुप्रसिक कविता की एक प्रमुख स्थिति में है।

अनुप्रसिक कविता की ज्ञानता की?

अनुप्रसिक कविता ने इस बात का आदेश कर दिया था कि सुधा, कांशिता और वातावरण संन्यासन की गणतंत्र से क्षेत्र के जीवन को सौंदर्य परिवर्तन किया जा सकता है। इसके प्रारंभिक अवस्था और अनुप्रासिक कविताओं की शाखा थी। अनुप्रसिक कविता की एक प्रमुख स्थिति में है।
भूमि-सुधार : सरकारी प्रयास

आज जरी के बाद से भूमि सुधार का विषय आम ध्वनि ने भूमि सुधार की कार्यक्रम के लिए विभिन्न माहितियों के साथ सार्थकता दी गई है। लगभग सारी सरकार ने भूमि सुधार की कार्यक्रम का कार्य बंद कर देने लायक करने के लिए देशातील्लो और प्रमाणक करने उड़ाए। लेकिन 45 सालों के बाद आया यह व्यत्यास कि जब जलवायु परिवर्तन की भूमि सुधार नहीं होकर आ गई है। भूमि सुधार के अनुसार जलवायु '92 तक घोषित 72 लाख मुक्त भूमि में से मात्र 48 लाख एकड़ भूमि ही वितरित की गई है।

4.5 अक्टूबर 1991 के दौरान टिल्ली में प्रधान मंत्री की अपील में भूमि सुधार के लिए पूर्व मुख्य मंत्री का समन्वय अधिमंडित किया गया। इससे यह निश्चित निर्णय नहीं कि 31 मार्च 1992 से फिर से पूरी उपलब्ध सीलिंग - मुक्त भूमि को वितरित कर दिया जा सके। 7 नवंबर 1991 को प्रधान मंत्री ने इस संस्था में सभी मुख्य मंत्रियों को प्रदान किया। उन्होंने अपने भाग्य पर यह निर्णय किया कि "इस कार्य के लिए अब तक 72 लाख एकड़ भूमि को मुक्त भूमि का रूप में वितरित किया जाएगा।" 24 लाख एकड़ भूमि की अभिज्ञ वितरित किया जाना है। संस्था अपने पूर्व बैठकों के लिए भूमि सुधार का दिन वितरित सही दिन से निकट गया है, हेतु जा पाए।

लेकिन इस विषय में आमतौर बात भूमि सुधार का रूप में हस्तिन हुई है। अप्रैल '92 में प्रधान मंत्री '92 के बीच सिके 47,697 एकड़ भूमि ही वितरित किया गया है जितने अन्य प्रक्रिया की ही 30,905 एकड़ भूमि शामिल है।

उसके बाद 14 मार्च 1992 के दिन विविध में साधन सरकार संगठन का एक सम्मेलन आयोजित हुआ। प्रधान मंत्री ने अपने उद्धवंश भाषण में कहा: 'पहले सबसे मुख्य मंत्री को कहा था कि भूमि सीलिंग करने के लिए उपलब्ध सभी भूमि को 31 मार्च 1992 से फिर से अधिकारिक कर दिया जाना चाहिए। लेकिन वे पार जो निर्णय नहीं दिया गया है। उनकी दक्षता का सबसे काफी कहा है कि अब इस दिशा में कुछ भी नहीं कर पाया।

यह सबसे हुआ कि इस कार्य में कुछ निश्चित संस्थाएं आई हैं।

यह भी हो सकता है कि ऐसे कार्य को पुनः करने में लगा समय लगाना है। मुख्यमंत्री के इसी प्रकार समन्वय को लेकर यह अधिक आयोजित किया गया।

इस समन्वय में सबसे महत्वपूर्ण से जो संस्थाओं ने वेश्यार की गई, वे इस प्रकार हैं:

1. सीलिंग - मुक्त भूमि के लिए शुरू करने के लिए पहले कहा जो विधि (31 मार्च 1992) निर्देशन के लिए भूमि सुधार करना जाना विधियों।

2. जलवायु भूमि कार्य के कार्य के लिए जलवायु भूमि करना जाना जाना विधियों। ऐसी भूमि का निर्णय 30 जुलाई 1992 तक नहीं हो जा चुका।

लेकिन इस विषय में आमतौर उपलब्धि ही हस्तित हुई है। अप्रैल '92 से पहले '92 के बीच निकले 47,697 एकड़ भूमि ही वितरित किया गया है जितने अन्य प्रक्रिया की ही 30,905 एकड़ भूमि शामिल है।
भूमि सुधार का कार्यक्रम ऐसा कार्यक्रम है जिसे संरक्षण से पहले के नेतृत्व ने अपने केंद्रीय वधायक और स्वतंत्रता के बाद रही ने-ता भूमि सुधार की सार्वजनिक का दृष्टि करने में प्रभाव पाना करते हैं। इस कार्यक्रम का पुनरुल्ला मक्खल भूमि मिलियन्स के पनाले सामग्रीक सावधान ध्विंधि को सोड़ा है और इसके लिए कारायली अधिकार ने शुरू की चाल, बांटी पर भूमि, प्रभावण गठबंधन के बड़े तबके का संपत्ति अधिकार पुनर्गठित करता, होगा है।

कर्ता राज्य/के.शाखा
प्रभावित सुधार
कंप्यूत का गाई जमीन
बाँट गया शतता का क्षेत्र

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम</th>
<th>जानक</th>
<th>राज्य/के.शाखा</th>
<th>प्रभावित सुधार</th>
<th>कंप्यूत का गाई जमीन</th>
<th>बाँट गया शतता का क्षेत्र</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>अर्थ प्रेम</td>
<td>7.29</td>
<td>5.40</td>
<td>4.63</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>अर्थ प्रेम</td>
<td>6.10</td>
<td>5.47</td>
<td>4.32</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>किराक</td>
<td>4.75</td>
<td>3.92</td>
<td>2.68</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>तुरंगल</td>
<td>2.52</td>
<td>1.55</td>
<td>1.27</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>हंसियामण</td>
<td>1.21</td>
<td>1.13</td>
<td>1.13</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>हंसियामण</td>
<td>2.84</td>
<td>2.82</td>
<td>0.03</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>ज्ञेनक राज्य</td>
<td>4.56</td>
<td>4.50</td>
<td>4.50</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>कंटक कंपनी</td>
<td>2.75</td>
<td>1.56</td>
<td>1.14</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>9.</td>
<td>कंटक कंपनी</td>
<td>1.33</td>
<td>0.93</td>
<td>0.63</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>10.</td>
<td>मध्य प्रदेश</td>
<td>2.95</td>
<td>2.56</td>
<td>1.76</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>11.</td>
<td>मध्य प्रदेश</td>
<td>7.04</td>
<td>5.24</td>
<td>5.25</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>12.</td>
<td>एमसीपी</td>
<td>0.02</td>
<td>0.02</td>
<td>0.02</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>13.</td>
<td>एमसीपी</td>
<td>1.74</td>
<td>1.61</td>
<td>1.46</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>14.</td>
<td>एमसीपी</td>
<td>1.36</td>
<td>1.05</td>
<td>1.02</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>15.</td>
<td>एमसीपी</td>
<td>5.19</td>
<td>5.50</td>
<td>4.34</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>16.</td>
<td>एमसीपी</td>
<td>1.80</td>
<td>1.71</td>
<td>1.44</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>17.</td>
<td>एमसीपी</td>
<td>0.02</td>
<td>0.02</td>
<td>0.02</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>18.</td>
<td>एमसीपी</td>
<td>5.32</td>
<td>5.02</td>
<td>3.61</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>19.</td>
<td>एमसीपी</td>
<td>12.63</td>
<td>11.43</td>
<td>9.13</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>20.</td>
<td>एमसीपी</td>
<td>0.08</td>
<td>0.08</td>
<td>0.06</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>21.</td>
<td>एमसीपी</td>
<td>0.01</td>
<td>0.01</td>
<td>0.003</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>22.</td>
<td>एमसीपी</td>
<td>0.02</td>
<td>0.02</td>
<td>0.01</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

कुल: 72.56
62.53
48.45
विकल्पों से जुड़ी कुछ संस्थाएँ

1. चेतना निकासा

1977 से इस संस्था का काम सुरु हुआ। शुद्धतावादी है इस प्रमुख के पौर्व गौंडे में गरीबी लोगों को समझिएक, आर्थिक स्तर से स्थानांतरण बनाने के लिए जरूरत्व पड़े, जीते विज्ञानों द्वारा भूखनेवाले गरीब, अतिविश्वसनीय लोगों के बीच में काम किया गया था। केंद्रान में यह संस्था 60 गौंडे में काम कर रही है। कर्मचारियों के लिए साक्षात्कार, आवास-रूप के माध्यम से पहुँच के साथ अपने स्वयं सरकार कार, पीढ़ियों, परिवारों को अभी अपने से आत्म-सहयोग कार्य के साथ-साथ 'चेतना निकासा' ने वैश्विक की यात्रा पर भी कम सुरु किया। केंद्रान में इस कार्य के निर्मलतापूर्वक कर्मचारी व्याप्त आ रहे हैं।

(अ) फलस्वरूप हृदय तैयार करना।
(ब) स्थानीय पंचायत पंचायती निरीक्षण करना।
(च) स्थानीय राजस्व उपयोग करके कम्पनी खंड तैयार करना।
(छ) उपयोग करके बीएम तैयार करना।

2. चंद्रीपुर विकास प्रांगणी

1985 में बिहार के पत्तलुम जिले के जमीलपुर गाँव में चंद्रीपुर विकास प्रांगणी की स्थापना हुई थी। शिक्षक 1986 में एक सोसाइटी "चंद्रीपुर विकास प्रांगणी" की स्थापना की गई। यह गिहक की संस्था के लिए आकर्षित बनी। उनके अंतर्गत विकास प्रांगणी कार और पोशाक संस्थान तथा अन्य कार्यालयों की स्थापना जल्द ही उन्नति लाई।

(अ) यह एक सोसाइटी की एक सोसाइटी है।
(ब) यह एक सोसाइटी की एक सोसाइटी है।
(च) यह एक सोसाइटी की एक सोसाइटी है।
(छ) यह एक सोसाइटी की एक सोसाइटी है।

नागरिक जनसंख्या के लिए निर्माण चंद्रीपुर गाँव में सिल्वर 442 001.

शति और किग
3. विद्यार्थी ने 45 किलोमीटर पूर्व दिशा में "वस्त्रहिन्दु" का स्वरूप दिखाया है। यहीं पर शिक्षित विद्यार्थी के द्वारा प्रभावी एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित की गई है। इसके लिए निम्न विधि की दी गई है: 4. पांव पंखा नारी

हिंदू पीढ़ियां के लिए दस्तावेज का संग्रह उपरोक्त पुस्तक के पांव पंखा से लिख सकता है। जो अंशों में 15 वर्षों से 20 वर्षों के मध्य तक करेंगे, पांव पंखा ने भूमिका खेलने का भी पांव के पांव अवरोध है।

4. पांव पंखा नारी

रूपम गीतिका के लिए निम्न 4. पांव पंखा नारी

हिंदू पीढ़ियां के लिए दस्तावेज का संग्रह उपरोक्त पुस्तक के पांव पंखा से लिख सकता है। जो अंशों में 15 वर्षों से 20 वर्षों के मध्य तक करेंगे, पांव पंखा ने भूमिका खेलने का भी पांव के पांव अवरोध है।

5. चार्टर्ड खिलाड़ी

रोशनी के अंदर नारी बिंदु के राजनीतिक संस्थाओं से अन्य सभी हमेशा सुश्रृंखला के लिए दस्तावेज का संग्रह उपरोक्त पुस्तक के पांव पंखा से लिख सकता है। जो अंशों में 15 वर्षों से 20 वर्षों के मध्य तक करेंगे, पांव पंखा ने भूमिका खेलने का भी पांव के पांव अवरोध है।
वैकल्पिक भूमि उपयोग कार्यशाला: नई चुनौतियाँ

भूमि प्रदेश के अन्तर्गत, नस्लबृद्धि नव भारत उपवर्ग से जनवरी से 31 जनवरी तक होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों के अनुसार की जाने गई है।

किसी भी स्थान से भूमि प्रदेश के उल्लेखनीय वेबसाइटों में विभिन्न सम्पर्क सेंटर अथवा संस्थाओं में जनावर एवं जीवन पर लोगों के अधिकार को लेकर जल्दी समझ लेता है। इसके तीन सालों के अन्तर्गत, (एक) प्रधान (जनसम्मान) ने उस संस्था को एक व्यापक जन-संरक्षण का रूप दिया। इस जन-संरक्षण से जब लोगों में परिवेश भूमि संरक्षण को जनता पर कहानी किया। अन्य नव भारत के जनजीवन में एक अच्छा परिप्रेक्ष्य का उत्साह तैयार किया गया है।

इस कार्यशाला में वैकल्पिक भूमि उपयोग संबंधी विचारों के दौरान जो बातें, समस्याएं, चुनौतियाँ और उपयोग संबंधी सभा अक्षर पर कहानियाँ किए जायेंगी।

इस कार्यशाला में वैकल्पिक भूमि उपयोग संबंधी विचारों के दौरान जो बातें, समस्याएं, चुनौतियाँ और उपयोग संबंधी सभा अक्षर पर कहानियाँ किए जायेंगी।

मौजूदा स्थिति

बजाने में विकल्प की दिशा में कई अलग-अलग बातें हैं जैसे-सूर्य के निगम, जिन्हें परिवर्तित किया जाना चाहिए। इस लोगों का विचार पर कहानियाँ किए जायें।

हां, चुनौतियों के दौरान जो बातें, समस्याएं, चुनौतियाँ और उपयोग संबंधी सभा अक्षर पर कहानियाँ किए जायेंगी।

हां, चुनौतियों के दौरान जो बातें, समस्याएं, चुनौतियाँ और उपयोग संबंधी सभा अक्षर पर कहानियाँ किए जायेंगी।

हां, चुनौतियों के दौरान जो बातें, समस्याएं, चुनौतियाँ और उपयोग संबंधी सभा अक्षर पर कहानियाँ किए जायेंगी।

हां, चुनौतियों के दौरान जो बातें, समस्याएं, चुनौतियाँ और उपयोग संबंधी सभा अक्षर पर कहानियाँ किए जायेंगी।

हां, चुनौतियों के दौरान जो बातें, समस्याएं, चुनौतियाँ और उपयोग संबंधी सभा अक्षर पर कहानियाँ किए जायेंगी।

हां, चुनौतियों के दौरान जो बातें, समस्याएं, चुनौतियाँ और उपयोग संबंधी सभा अक्षर पर कहानियाँ किए जायेंगी।

हां, चुनौतियों के दौरान जो बातें, समस्याएं, चुनौतियाँ और उपयोग संबंधी सभा अक्षर पर कहानियाँ किए जायेंगी।

हां, चुनौतियों के दौरान जो बातें, समस्याएं, चुनौतियाँ और उपयोग संबंधी सभा अक्षर पर कहानियाँ किए जायेंगी।
इस कारणों ने उत्सर्जन तथा सुरक्षा आन्दोलनों के अपने क्षेत्र विषय की स्थिति, वहाँ की निंदिततियां, समस्याओं से अग्रसारत रखा। उन्होंने सारे से आए ऊर्जाका प्रसार ने गाँव की गोरी पुर्वोक्त के उपयोग के अधिकारों को आंखों चांदी की। वेढ़ी लाल गांव ने कहा कि उन्होंने गाँव में लोगों के साथ निकल एक तैयार सिकायत जिसमें अन्य 100 फूड जमीन की लिस्ट हो सकती है, हार जिले की सीटा बना कर स्थापना का करना था कि गाँव ने जब तक अपनी पंजाब को सामने रखा तो वह स्पष्ट है कि चुड़ा कर पाना सामना नहीं, गाँव के रिंगर बल्कि ने काम कर सी बात बनती है बात कि किस प्रकार यह दुनिया के पर्याप्ती परिस्थितियों को जमीन संस्करण लाने में सक्षम रहने का भाव नहीं है और इसीलिए सामना कि यहाँ का सात सिकायत में धारा की प्रतिक्रिया हो सकती है। लेकिन प्रति के आंतरिक अधिकृत पूछतांत्री कार अच्छी नहीं होता; सीधी जिले के तुझसी बल्कि अक्षम कर दे किसी बात की सीधी ने बात कि यहाँ का कार्य अपने दिग्गजों के कारण सुभाष पड़ रहा है। जमीन भी उबल-खड़ देखने के नाते उपजाफ नहीं है। यही सबसे बड़ी चीज़ नेटवर्क से 22 किलो मीटर दूर लाकर भाषा पाटी गाँव गया जहाँ के 66 भूखुखी परिवारों को 146.57 एकड़ जमीन जीवित की भई थी और जहाँ "पंजाब रिझर्क" द्वारा 50 फूड का भुगतान का संकल्प हो रहा है। यहाँ की "पंजाब रिझर्क" के स्वरूपों के साथ बाहरी हुई जैसे र टु भारी के सकंडार के कारण केवल पर बांधक अनूठा आया करता है। इत्यादि। गाँव बालों के साथ बाहरी दो सौ सात एक भारी उत्पाद के हमेशा उत्पाद हुई जैसे सिकायत की समस्या; संस्कृती धरोहर एवं सहयोग के बारे में उन लोगों की कर जानकारी हो; शीर्ष व जनश्रुतियों आदि के मूल्यों में बुद्धि के कारण स्पष्ट नहीं हो रहा है। भूखुखुखी लोगों को जिस जीवित उसके उपर सबसे संभावित साक्ष्यों व भूख में बाहरी हुई। दलित जमीनी देश के कारण पारी की समस्या है। इसलिए आर्थिक लोग़
पिन्ने  न जीवन नीति कैसी हो?

1) जीवन का समय नीति, 2) छोटा कृष्ण की जीवन नीति, 3) बड़े कृष्ण की जीवन नीति, 4) बड़े कृष्ण की जीवन नीति, 5) बड़े कृष्ण की जीवन नीति, 6) जीवन की जीवन नीति, 7) जीवन के बड़े कृष्ण की जीवन नीति, 8) जीवन के बड़े कृष्ण की जीवन नीति, 9) जीवन के बड़े कृष्ण की जीवन नीति, 10) जीवन के बड़े कृष्ण की जीवन नीति, 11) जीवन के बड़े कृष्ण की जीवन नीति, 12) जीवन के बड़े कृष्ण की जीवन नीति, 13) जीवन के बड़े कृष्ण की जीवन नीति, 14) जीवन के बड़े कृष्ण की जीवन नीति,
1. तद्दिन गर्भवती के प्रति संवदनशीलता जगाने का कार्यक्रम

ओपर प्रेस में प्रकाशित जिले के अत्यंत आरोपित स्वास्थ्य पर 5-6 जुलाई के दिनों "प्रिया" ने "सोशल स्तर फॉर फील्ड इंटेलिजेंस भुल सुल अआर्मेंट" के लिए वह समूह में साक्षात्कार अनुवादक के प्रति संवदनशीलता जगाने का एक कार्यक्रम आयोजित किया। यह समूह रट पर भरे उन गर्भवतियों का अध्ययन करने हेतु आयोजित किया गया जो पूरी तरह शोध का लक्ष्य न करते हुए रहे।

2. भूमि अध्ययन पर प्रशिक्षण

18 से 22 अगस्त 1992 के दौरान "प्रिया" द्वारा "अभिज्ञ भारतीय समाज सेवा संस्थान, गंगपूर (जोधपुर)" के कर्मचारियों के लिए एक प्रशिक्षण शीर्षक का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण शीर्षक में संस्थान के 22 संकेत कर्मचारियों ने पाए लिया। इससे क्षेत्रीय भूमि संसाधन पर प्रभावी विचारों और अध्ययन की रूढ़िकृत तारीख की गई। अतः पार महीनों में यह अध्ययन पूरा किया जाएगा।

3. कोस्टल सिस्टर्स स्टैंडर्ड पर सहभागी अनुसंधान प्रशिक्षण

11-13 अक्टूबर 1992 के दौरान "प्रिया" द्वारा मध्य प्रदेश के आंध्र एवं उड़ीसा दुनिया पौर्णिमा में कोस्टल सुपर स्टैंडर्ड से जुड़े समूहों के लिए सहभागी अनुसंधान प्रशिक्षण का दौरा कर समर्पित किया। इस प्रशिक्षण में अभ्यास प्रेस और जिला पुलिस के अन्दर अभ्यासकों ने हिस्सा लिया जो इसके फलन में भी उपस्थित थे। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य भूमि अध्ययन के दौरान सूक्ष्मता की गई जानकारीयों तथा आयोजन का सही रूप से निर्माण करना और भूमि की जोखिम का निवरण बनाना।

अध्ययन के दौरान इकट्ठाओं की गई जानकारियों और आयोजन का सूचक अवलोकन कर लेने के उपरांत यह निर्देश लिया गया कि इस पर अभ्यास के लिए विभिन्न रिपोर्ट कैडेटों की सहायता करना।

4. सूचना पर एक कार्यक्रम

16-17 अगस्त 1992 के दौरान "प्रिया" ने "प्रकाशित सूचना का दौरा" 92 वाले वाक्य पर उनके दीर्घकालीन निर्देश के लिए अपनी एक कार्यक्रम आयोजित की। यह अभ्यास इस गुड़े पर "प्रिया" के जुलूस दिन का ही एक हिस्सा है। इस कार्यक्रम का केंद्र विभिन्न संस्थाओं का स्थानांतरण करना, उनका विकास करना का काम है। किसी भी प्रकाश संस्थान दौरा बार-बार सूचना का काम कर रहे हैं। सूचना के निर्देश की दीर्घकालीन कार्यक्रम के साथ-साथ बना गया।

5. गंगा - हिमाल पद्यात्मक

गंगा - हिमाल पद्यात्मक का शुभारंभ 21 मार्च 1993 को होगा। इस पद्यात्मक के लिए आयोजक संघ की जयस्मात है। गंगा पर उन दोनों के लिए पद्यात्मक के लिए चित्र : 1) श्री अबिनंदन प्रभाकर, एक हिमाल पद्यात्मक निदेशक, गंगा - 812 002 (फिरका) 2) श्री अशोक प्रभाकर, पंजाब - हिमाल पद्यात्मक संघ, दिल्ली - 842 001 (फिरका) 3) श्री अनिता प्रभाकर, गंगा - 800 003, गंगा - 652394.
6. जन-जागरण पद यात्रा का आयोजन

राष्ट्रीय साक्षरता, राष्ट्रीय एकता एवं सामाजिक
समानता के प्रति आश्रय देने के लिए
‘अपला फाउंडेशन वल्लर पीपुल्स पार्टी यूनियन’
(सीएसई) के तहत में 1 जनवरी 1992 से 10
मार्च 1992 तक कानपुर देशरत जनादेश (उन
प्र) लिखित होते नै में जन-जागरण पद यात्रा का
आयोजन किया जा रहा है।

जनादेश कानपुर देशरत (उन प्र) की पुष्करण व
वाहनपुर टेस्टिङ्स के अध्यक्ष आने वाले लिखित
केंद्र ने यह परयात्रा 100 फिल्मों की होनी,
जिसमें करीब 150 गज़ं ने देशी संपर्क के
सहयोग से पूरी की। परहेज पंगों के तुलना रचना में शेखर
gujari।

परयात्रा की दृष्टिकोण शाम वाटे (दुर्गम) से
होंसी तथा सामाजिक दृष्टि (तहसील वाहनपुर)
संथा कार्यक्रम में निभा जारी। परयात्रा में
करीब 250 लोगों के भाग में तालमेल की सम्पन्नता है।
अभियंता जारी के लिए संपर्क करने के लिए 8 वार्षिक
दिवांग दृष्टि, शाम - किलाबु उक - ओपन दक्षिणपुर
dिवा - वाहनपुर देशरत (उन प्र) - 203 206।

वारी बाँध के विषयों का आदेश

परहेज के लिए केंद्र ने यह परयात्रा 100 फिल्मों की होनी, जिसमें करीब 150 गज़ं ने देशी संपर्क के सहयोग से पूरी की। परहेज पंगों के तुलना रचना में शेखर gujari।
क्या यही है सरकारी कृषि नीति

भारत सरकार की कृषि नीति ऐसी है जिसमें किसानों को आनज की फैलाव के क्रम के अनकी फास्त (सांभा, कयाम, दूसर्या) उगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, किसानों को फल और सब्जियां लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ताकि खाद्य पदार्थों का जिरदारी में आगे रहने के लिए उसके दोनों हिस्सों में उत्पादकों की गरीबी की पूरी की जा सके; किसानों को उनकी खेती की सुरक्षा पर चेतावनी का पेड़ लगाने के लिए लगाया जाता है; खिदभवन कर रहे जाने को सुसामरीक खाद्य तथा सब्जियों का सत्ता ही मैं खेती है क्योंकि खेती के लिए किसानों को उनकी आह्वान और बीमारी शिक्षा के लिए उन्नति का जरूरी है।

इस नीति से समान के समान लोगों को ही लग लगेगा। इस रीति से बाकी देश के लोगों, जिन्होंने किसानों को खाद्य के लोगों, जिन्हें खाद्य के लिए नष्ट किया जा रहा है। इसी दिन गहरे शब्द में गहरे शब्द में किसान कर्मचारियों को भी भेंजने के लिए यह तथ्य लगाने के लिए करने गले का कारण करते हैं। सरकार को इस तरह शरीरी नीति को विचार देने का गरीबी नहीं होता है। नहीं तो जो हिन्दू दूर नहीं कि जब भारत में आनज का भारत समक्ष उठ बना है। अभी नित के कई देशों में आनज के संकट का कारण वह वर्ष ही पुंछ है जब अगर 80, 9 में हो गया है। (देखें तालिका -1)

देश में आनज के कैपिटल छोटे तथा बड़े राष्ट्रीय रेलवे में 3 गुना कर गया है लेकिन रेलवे के कैपिटल जो कि 1951 में 8 लाख करोड़ थे और 1957 में 12 लाख करोड़ तक हो गया है। इसलिए लोगों के लोग, ब्राजील के परियोजना भी बढ़ाने का है जो तो आनज का परियोजना बढ़ गया है। (देखें तालिका -2)

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>अंक (लाख)</th>
<th>दल (लाख)</th>
<th>आनज (लाख)</th>
<th>झंडी (लाख)</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1951</td>
<td>112.2</td>
<td>10.1</td>
<td>9</td>
<td>304.2</td>
</tr>
<tr>
<td>1952</td>
<td>142.8</td>
<td>10.9</td>
<td>11.1</td>
<td>309.7</td>
</tr>
<tr>
<td>1953</td>
<td>149.0</td>
<td>10.4</td>
<td>11.1</td>
<td>417.5</td>
</tr>
<tr>
<td>1954</td>
<td>144.0</td>
<td>10.4</td>
<td>11.1</td>
<td>417.5</td>
</tr>
<tr>
<td>1955</td>
<td>140.0</td>
<td>10.4</td>
<td>12.3</td>
<td>470.2</td>
</tr>
<tr>
<td>1956</td>
<td>142.0</td>
<td>10.4</td>
<td>12.3</td>
<td>503.9</td>
</tr>
</tbody>
</table>

शास्त्री और संग
विहार में सूखा क्यों?

कुछ ही दिन पहले विहार सरकार ने पूरे राज्य को सूखा पीड़ा घोषित किया है। पिछले कुछ महीनों से धमाके, गिरिजापुर इलाके में जलवायु स्थिति की बुखार आ रही है। ये सत्य है कि छोटनागपुर और स्थानीय प्रशासन क्षेत्र में बारिश कम होती है और पानी भी बारिश पर निर्भर रहती है। तबका राज्य अग्रणी पीड़ा धारी? स्थानीय के बाद विहार में 59 बड़े और 23 बड़े बंगाल बांधों ने कार्य रत्न बन रहा है। कहा इन बड़े बंगालों से पानी की समस्या दूर करना है। राज्य के आधिकारिक वृद्धि विकास के लिए करीब 370 रुपए हुए लेकिन उनका कारोबार बना नहीं रहा। इस बंगालों के लिए पाना कम रहे हैं। राज्य के आधिकारिक वृद्धि विकास के लिए पाना कम रहे हैं। राज्य सरकार ने सबसे बड़े बंगालों के लिए 57 हजार रुपए भी नहीं किया है। राज्य में जलवायु औद्योगिक राज्यों में घाटी के लिए पाना कम रहे हैं। राज्य सरकार में केवल बड़े बंगालों के लिए सबसे 11 हजार रुपए भी नहीं किए हैं। राज्य में अन्य भी बड़े बंगालों के लिए सबसे 11 हजार रुपए भी नहीं किए हैं। इस बंगालों के लिए अन्य भी बड़े बंगालों के लिए सबसे 11 हजार रुपए भी नहीं किए हैं। इस बंगालों के लिए अन्य भी बड़े बंगालों के लिए सबसे 11 हजार रुपए भी नहीं किए हैं। इस बंगालों के लिए अन्य भी बड़े बंगालों के लिए सबसे 11 हजार रुपए भी नहीं किए हैं। इस बंगालों के लिए अन्य भी बड़े बंगालों के लिए सबसे 11 हजार रुपए भी नहीं किए हैं। इस बंगालों के लिए अन्य भी बड़े बंगालों के लिए सबसे 11 हजार रुपए भी नहीं किए हैं। इस बंगालों के लिए अन्य भी बड़े बंगालों के लिए सबसे 11 हजार रुपए भी नहीं किए हैं।
सामूहिक ससाधनों तक पहुँच पर एक कार्यशाला

12-14 नवम्बर 1992 के बीच नई दिल्ली स्थित "प्रीया" के अन्दर एक प्रस्ताव में सामूहिक भूमि पुर्व जनावर एक लोगों की दर्शकी प्रकरण पर एक राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की। इस कार्यशाला का मोटापा उद्देश्य सामूहिक पृष्ठ सामूहिक जनावर (मुख्य रूप से जस्तानाल जूही, घरे पूनि और सिंहि पूनि) के पुढ़दे पर उचाई बनाए रखने लागू हुमक्कू हुने से गरीबों की घटनों में से जुड़े स्तरों को उद्योग करना था। इस कार्यशाला में अंड्रे प्रेसै, बर्नार्ड, गॉर्डन, टर्नर, गार्डन, विल्स, और डॉन, उपलब्धि से 22 सहभागियों ने हिस्सा लिया।

इसके वाक्यों-आयाम के तौर पर यह निर्देश दिया गया कि सामूहिक संपत्ति ससाधनों तक पहुँच की पहचान की रैली के रूप में जनावर जनित वल्लर पर अभियान किया जाय, उस सात की भूमि की भूमि का भविष्य स्थिति संघी जाय और क्षेत्रिय स्तर पर कार्यशाला आयोजित किया जाय। इस गुड़े पर गैर-कार्यकर्ता संगठन के इकट्ठा कर एक उद्योग कर उसका पूर्व और उन्नयन बनाए के ति विशेष के भूमि ट्रस्ट की नीति और अभ्यास किया जाय, इसमें और इन गुड़े पर एक कार्यशाला आयोजित किया जा।

सोसायटी फॉर पार्टिसिपेटरी रिसर्च इन एशिया (प्रीया)
42, तुगलकाबाद इंस्टीट्यूशनल एरिया नई दिल्ली - 110 062.
दूरभाष : 6451908, 6471183
टेलेफोन : 31-71477 ए.आर.पी.एन. - इन
फैक्स : 91-11-6442728